''मअरक-ए-हक़ व बातिल''

मोहतरमा तसवीर फातिमा जाफरी साहिबा

हक़ व बातिल, ख़ैर व शर, नूर व ज़ुल्मत के तसादुम की इबतिदा तख़लीक़े आदम अलैहिमुस्सलाम से हुई इबलीस ने हज़रत आदम (अ0) को सिजदा करने से इन्कार करके मख़लूक़ को सरकशी हुक्मे खुदा की नाफरमानी का दर्स देने का आग़ाज़ किया इस तरह से हक़ व बातिल की न ख़त्म होने वाली कशमकश का संगे बुनियाद इबलीस मलऊन के हाथों रख दिया गया।

शैतान ने क़यामत तक के लिए इन्सानों को गुमराह करने का चैलेन्ज कर दिया और इबलीस बशरी कमज़ोरियों यानि माल व ज़र, तख़्त व ताज, ऐश व इशरत से फायदा उठाते हुए इन्सानों को गुमराह करता रहा। अगर खुदा चाहता तो दुनिया में ख़ैर व शर, हक़ व बातिल का तसादुम न होता हर तरफ हक़ व सदाक़त के उजाले होते लेकिन यह तसादुम इस हक़ीक़त को उभारता है कि इन्सान अशरफुल मख़लूक़ात होने के साथ खुदमुख़्तार भी है। मालिक यह देखना चाहता है कि इस दुनिया में आकर किस ने मेरी बन्दगी की और किस ने मेरे हुक्म से मुँह मोड़ कर सरकशी की और इस के साथ–साथ फैसले का दिन मुक़र्रर कर दिया। सरकशी और बग़ावत का रास्ता इख़्तियार करने वालों के लिये जहन्नम बनाया और बन्दगी और इताअत करने वालों के लिये नेअमतों वाली जन्नत क़रार दी।

हक़ व बातिल दो मुतज़ाद क़ुव्वतें हैं दो ऐसे रास्ते हैं जिनका संगम किसी तरह मुमकिन नही क्योंकि दोनों के उसूल और मक़ासिद जुदा–जुदा होते हैं ज़ुल्म का दारो मदार ताक़त, ना इन्साफी, माद्दियात और हवस पर होता है जबकि हक़ का दारो मदार शराफ़त, इन्सानियत, अद्ल व इन्साफ, तवक्कुल और हक़ गोई पर होता है बातिल का मक़सद लोगों पर अपनी हुक्मरानी क़ायम करना होता है जबकि अहले हक़ का मक़सद बन्दों जाबिरों की हुकमरानी को ख़त्म करके अल्लाह की हुकमरानी क़ायम करना होता है।

और नतीजे में कभी हक़ का ग़लबा होता है और कभी बातिल अपनी आरज़ी कामियाबी पर नाज़ाँ होता है।

बातिल और बदी की क़ुव्वतों ने मद्दी वसाएल का सहारा लेकर हर दौर में हक़ की आवाज़ को दबाना चाहा मगर हक़ की सदा ने ज़ुल्म व तशद्दुद की ताक़तों को पाश–पाश कर दिया हर दौर इस की मिसालें पेश करता रहा है कभी बातिल का परचम फिरऔन के हाथों में आया और हक़ की सदा मूसा (अ0) की ज़बान बनी फिरऔन ने चाहा कि सदाए हक़ को नील की लहरों में दफना दे मगर नील की मौजें हक़ की सदा को रोकने में कामयाब न हो सकीं कभी नमरूद ने ताक़त के मुज़ाहरे से हक़ की सदा को

दबाना चाहा लेकिन हज़रत इबराहीम (अ0) ने आग में जाकर हक़ की शनाख़्त करवाई। कभी फारान की चोटीसे बुलन्द होने वाली सादाए हक़ को शेअब अबी तालिब में महसूर किया कभी ओहद, बद्र, ख़न्दक़ व ख़ैबर की घाटियों से इस आवाज़ को रोकने की कोशिश की गयी मगर बातिल को सिवाए नेदामत और शर्मिन्दगी के कुछ हाथ न आया। बातिल अपनी मुसलसल नाकामियों से बिलबिला उठा बातिल का परचम अब एशिया के सबसे बड़े हुकमरान यज़ीद के हाथों में आया बातिल इस बार यह ठान कर आया था कि इस बार इबलीस, शद्दाद, नमरूद, फिरऔन, अबुजहल ग़र्ज़ कि सबकी नाकामियों का बदला लेकर रहेगा इस बार बातिल अपनी पूरी आब व ताब मुकम्मल ज़ुल्म व सितम, बरबरियत के माद्दी वसाएल के तमाम तर इख़्तियारात के साथ हक़ की आवाज़ को हमेशा के लिए दबाने को आगे बढ़ा। इस बार बातिल के तमाम चेहरे यज़ीद के रूप में उभर कर सामने आये अब वह वक़्त आ गया था कि मुजस्सम बातिल व पैकरे बदी के मुक़ाबले में मुजस्सम हक़ व नेकी का पैकर हो जिसके जिस्म में मूसा, ईसा, इबराहीम, इस्माईल और मोहम्मदे अरबी अलैहिमुस्सलाम की रूह जलवा गर हो वह हक़े मुजस्सम, पैकरे नेकी, मुफस्सिरे इस्लाम, मुहाफिज़े क़ुर्आन नवासए रसूल (स0) हुसैन इब्ने अली (अ0) थे।

हुसैन ने हक़ की बक़ा के लिए एक नहीं मुख़तलिफ तरह की क़ुर्बानियाँ पेश कीं। क्योंकि अब वह वक़्त आ चुका था कि वह यज़ीद व यज़ीदियत को हमेशा के लिए मिटा दे। इमाम (अ0) ने बुराई को मिटाने के लिए यज़ीदियत को बेनक़ाब करने के लिए एक बे नज़ीर लशकर तैयार किया और मुक़ाबले का एक नया तरीक़ा निकाला जो इससे पहले दुनिया ने नही देखा था आप ने हज़ारों लाखों नुफ़ूस को जमा नहीं किया बल्कि अपने लशकर के लिए ऐसे अफ़राद को लिया जो अपने ज़ोहद व तक़वा, किरदार व औसाफ की बदौलत इस्लाम की तालीमात के तरजुमान थे आप ने गुलिस्ताने रिसालत के फूलों से अपने लशकर को सजाया और रसूले खुदा (स0) के घराने की मोअज़्ज़ज़ ख़वातीन जिन में आपकी हक़ीक़ी नवासियाँ भी शामिल थीं को साथ लिया ताकि इन्क़िलाब इस्लामी औरतों की ख़िदमात से ख़ाली न रह जाए। आप अपने दुश्मन की फ़ितरत को भी खूब जानते थे और आपको अपने मिशन की अहमियत का भी अन्दाज़ा था अपने मिशन के लिए जिस तरह के भी किरदार की ज़रूरत थी उसको मुन्तख़ब कर लिया जिन किरदारों ने क़ुर्बानी पेश करके क़यामत तक के लिए हक़ के हौसले को बुलन्द करने वाली दर्सगाह का क़याम कर दिया जिस में बहत्तर किरदारों में हज़ारों तालीमात, एख़लाक़ियाते इस्लामी निहाँ थीं। ईसार, क़ुर्बानी, शुक्र, सब्र, शुजाअत, फ़र्ज़ शनासी, ज़ुल्म का मुक़ाबला रहती दुनिया तक मुतलाशिए हक़ इस दर्सगाह से नमूना हासिल करते रहेंगे और हर ज़माने के यज़ीदी मिज़ाज हुक्मरानों के दिलों में ख़ौफ व वहशत पैदा करते रहेंगे।

बातिल की फ़सल के लिये बन्जर है कर्बला
प्यासा है हक़ तो एक समन्दर है कर्बला
कल भी यज़ीद ख़ौफ ज़दह था हुसैन से
अब भी यज़ीदियों के लिए डर है कर्बला

वस्सलामु अला मनित्तबअल हुदा